आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 358 ARYA SABHA MAURITIUS 1st Apr. to 7th Apr. 2017

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्नऽआ सुव ।।१।।

यजु० ३०/३

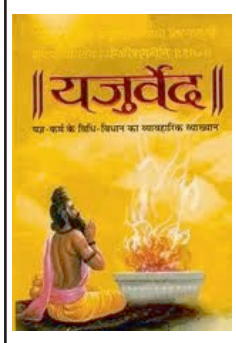

भावार्थ – *हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए ।*

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

Om Vishwāni Deva Savitar Duritāni Parāsuva.
Yadbhadram Tanna Āsuva.

Meaning of words :- **Savitah** - Creator of the entire universe and source of all prosperity, **Deva** - the self-illumined God and the Giver of all happiness, **Nah** - our , **Vishwāni** – all, **Duritāni** - bad habits, vices and calamities, **Para Suva** - wipe off, **Yat** – That, **Bhadram**- beneficial virtues and good deeds, **Tat** – That, **Āsuva** - bestow, confer upon.

Purport :- *O Lord, Creator of the universe, Source of all our prosperity, Self-illumined, Giver of happiness, we pray Thee to remove all our vices, bad habits, evil inclinations and sorrows. Instead, confer upon us virtues, create in us the desire to perform good deeds, bless us with the righteous nature inherent in ourselves and provide us with more resources to enable us to enjoy bliss.*

Explanation :- If we ponder upon the meaning of the above 'mantra' attentively, two important aspects emerge : First, this prayer is offered to the Almighty to remove our bad habits and vices and second, to bestow what is good, auspicious and beneficial on us.

The world consists of both good and bad aspects. Fortunate are they who choose the right path from their early childhood and tread on it till they breathe their last. Many are they who come to adopt the right path after experiencing the outcome of the sins they committed in their early lives and their bad habits.

Munshiram who was later to become Swāmi Shraddhānanda, offers the appropriate example of such a person. In his youth, he was an atheist and spent his life eating, drinking and merry making. He developed many bad habits. It was after listening to the discourses of Maharshi Dayānanda Saraswati that he took the decision to abandon his evil ways so as to start life anew. He joined the Ārya Samāj movement and devoted a lot of his time to social work. Finally, he renounced the material world to serve humanity. His 'Shuddhi Andolan' -- Reconversion of the Hindus -- back to their fold, the establishment of 'Gurukul Kangri' and his contribution to free India from the British rule were some of the main activities for which posterity will remember him.

Munshiram put this mantra -- **"Om Vishwani Deva ...."** into practice. He rejected vices and came to cherish virtues. He became a great Monk and was known as Swāmi Shraddhānanda. Being a role model, we should follow his ideal way of living. His life is beneficial to one and all.

Dr O.N. Gangoo

विद्या और ब्रह्मचर्य

कीर्ति देवी रामजतन, व्याख्याता, महात्मा गांधी संस्थान

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का तृतीय समुल्लास इस ग्रन्थ की पूर्णता में अपना विशेष महत्व रखता है। जहाँ अध्ययन-अध्यापन विधि को विस्तार पूर्वक समझाया गया है, वहाँ ब्रह्मचर्य के मुख्य कर्त्तव्य भी दिखलाए गए हैं। विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूपी आभूषण, अन्य धारण करने योग्य आभूषणों से अतुलनीय बतलाए गए हैं। वे ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी धन्यवाद के पात्र होते हैं, जिनके मन विद्यारत होते हैं, जो सुन्दर, शील-स्वभाव से युक्त हैं, जो सत्य भाषणादि करते हुए नियम पालन करते हैं, अभिमान, अपवित्रता से दूर दूसरों की मलीनता का नाश करते हैं एवं जो सत्योपदेश और विद्यादान से संसार के दुख को दूर कर वेदोक्त कर्मों से परोपकार करते हैं। ये सब एक श्लोक के माध्यम से कहा गया है, जो इस प्रकार से है – **विद्या विलास मनसो धृतशील शिक्षा, सत्यः व्रता रहित मान मलाप हारः।।**

संसार दुख दलनेन सुभूषिता ये, धन्या नरः विहित कर्म परोपकारः ।।

विद्या प्राप्त करने वाला तथा शिक्षा देने वाला, दोनों यज्ञोपवीत धारी होने चाहिए। विद्या-स्थल ऐसा होना चाहिए कि लड़के और लड़कियों की पाठशालाएँ एक दूसरे से दो कोश दूर और एकान्त देश में हो। ब्रह्मचारियों का गुरु पुरुष एवं ब्रह्मचारिणियों का शिक्षक स्त्री होना अनिवार्य है। इन दोनों वर्गों को ८ मैथुनों से अलग रहने का विधान है और वे ८ मैथुन हैं – दर्शन, स्पर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषयकथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग। चाहे राजा की संतान हो या रंक की सभी को तपस्वी होना चाहिए और सभी की वेशभूषा, खान-पान, आसनादि समान हों। यही नहीं, उन्हें

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

पर्यावरण का संरक्षण

परमात्मा ने सृष्टि की रचना करके हमें जीवित रहने के लिए अनेक साधन प्रदान किए हैं – आकाश, पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि जैसे तत्व दिए हैं। शारीरिक रक्षा निमित वनस्पतियाँ तथा खाद्य पदार्थ आदि की व्यवस्था की है। स्वस्थ एवं आनन्दित रहने के लिए प्राकृतिक सौंदर्य की शोभा दी है। भूमण्डल और आकाशमंडल की संरचना की है, ताकि हम पृथ्वी पर शुद्ध वायु, पवित्र जल, अग्नि की उष्णता और पौष्टिक आहार ग्रहण करके जीवित रह सकें। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम नित्य पर्यावरण की शुद्धता पर ध्यान देते रहें ।

मनुष्य तो पर्यावरण की उपज है। जैसा पर्यावरण होता है, वैसा ही हमारा जीवन होता है। शुद्ध पर्यावरण में हम प्राणदायक वायु, जल, अग्नि और सात्त्विक भोजन प्राप्त करके स्वस्थ, आनन्दित और सुखी रह सकते हैं। और अशुद्ध वातावरण में पलकर दूषित वायु, अपवित्र जल तथा अनुचित भोजन पाकर कई प्रकार के संक्रामक रोगों के शिकार हो जाते हैं। हम ईश्वर प्रदत्त शुद्ध पर्यावरण को परदूषित करके स्वयं अपने को हानि पहुँचाते हैं। हमें सदा पर्यावरण की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

आज मानव जाति ने ज्ञान-विज्ञान की अपार शक्ति से विश्व का रूप ही बड़ा रोचक बना दिया है, फिर भी कितने नादान स्वार्थवश होकर अपने आसपास के वातावरण को खराब करने में लगे हुए हैं। अपनी भूल के कारण पृथ्वी की रौनक बिगाड़ रही है। कितने प्राणी प्रतिदिन सड़े पदार्थों को इधर-उधर फेंक देते हैं। प्लास्टिक, डिब्बे, थैलियाँ तथा कई सड़ी वस्तुएँ नदी-नाले और सड़क किनारे फेंक कर गन्दगी फैला रहे हैं। जिनसे नागरिकों को परेशानियाँ हो रही हैं।

देश में सड़क-वाहनों की वृद्धि होने से विषैले धूएँ आकाश मण्डल को दूषित कर रहे हैं। उद्योग धंधे बढ़ने से कारखानों के कार्बन से आकाश में काले धब्बे छा रहे हैं, जिसके दुष्परिणामों से तापमान बिगड़ रहा है। क्या यह हमारी मूर्खता नहीं?

आज विश्व में 'प्रदूषण' एक खतरे का विषय बना हुआ है। वैज्ञानिकों का कथन है कि लगभग चालीस प्रतिशत भूमि का भाग दूषित हो गया है। सामान्य तापमान से तीन प्रतिशत आज का तापमान बढ़ गया है। जिसके दुष्परिणाम से अचानक बाढ़ आ जाती है, सुनामी आ जाती है। तूफ़ानी मौसन में हवा का रुख़ तेज़ हो जाता है, समुद्र के पानी का स्तर बढ़ रहा है, बारिश के अभाव कई देशों में सूखा पड़ रहा है, कहीं पर कड़ी ठंड पड़ रही है। पृथ्वी की हरियाली दूर होती जा रही है। यह गम्भीर स्थिति देखकर इन्सान चिंतित हैं।

हमारे देश में पर्यावरण मन्त्रालय की ओर से बड़ी सावधानी वरतने का भारी अभियान चलाया जा रहा है। Bio Technology के प्रयोग में पूरा ध्यान दिया जा रहा है। बिजली का कम प्रयोग और Solar System का इस्तेमाल, पानी का सदुपयोग, खेतों में Bio-Farming का प्रयोग, पेड़-पौधों के रोपने के अभियान आदि पर मन्त्रालय एक अद्भुत कार्य कर रहा है, ताकि हमारे देश में हम अपने पर्यावरण को शुद्ध करने में सफल हो सकें ।

आज हम इस तनावपूर्ण जीवन में अपनी सुविधा के लिए स्वयं और दूसरों को हानि पहुँचा रहे हैं। अब हमें अपनी जीवन-शैली बदलने की ज़रूरत है। अन्यथा हम दूषित पर्यावरण उत्पन्न करके कई प्रकार के संक्रामक रोगों के शिकार हो जाएँगे तथा प्राकृतिक प्रकोपों की चपेट में आकर अपनी जान खो देंगे। हमारी ही ग़लतियों से हमारा जीवन दुख-दायी हो जाएगा। विश्व-पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन दिवस (World Environment & Climate Changing Day) के अवसर पर अगर हम यह संकल्प लें कि हम सदा अपने आस-पास का वातावरण शुद्ध रखें और दूसरों को पर्यावरण की शुद्धता का ज्ञान दें, तो अवश्य ही भूमण्डल और आकाश मण्डल की शुद्धता से पुनः तापमान सामान्य गति पर आ जाएगा। हम शुद्ध वायु, पवित्र जल, अग्नि की उष्णता तथा पौष्टिक भोजनों का सेवन करके प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेंगे। हमारे आज के उभरते हुए बच्चे और जवान इस स्वर्ग सदृश देश में भौतिक सुख, शान्ति और आनन्द भोगने के अधिकारी होंगे । इस बात का सदा ध्यान रहे कि ईश्वर की बनाई हुई दुनिया की सुन्दरता बिगाड़ना हमारा कर्म नहीं है, बल्कि उसकी रौनक बढ़ाना मानव धर्म है ।

बालचन्द तानाकूर

ओ३म्

आर्य सभा मोरिशस

आर्य सभा मोरिशस की कार्यकारिणी समिति (अन्तरंग सभा) का गठन सन् २०१७-२०१८ ई० के लिए निम्न प्रकार हुआ है :-

प्रतिनिधि - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, प्रो० सुदर्शन जगेसर, सी.एस.के, जी.ओ.एस.के, आर्य भूषण

मान्य प्रधान : डा० रुद्रसेन नीऊर जी, जी.ओ.एस.के,आर्य भूषण
प्रधान : डा० उदयनारायण गंगू जी, एम.ए.,पी.एच.डी, ओ.एस.के, जी.ओ.एस.के, आर्य रत्न
उपप्रधान : श्री हरिदेव रामधनी जी, आर्य रत्न
उपप्रधान : श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी, एम.एस.के,आर्य रत्न
उपप्रधान : श्री बालचन्द तानाकुर जी, पी.एम.एस.एम,आर्य रत्न
मन्त्री : श्री सत्यदेव प्रीतम जी, ओ.एस.के,सी.एस.के,आर्य रत्न
उपमन्त्री : डा० जयचन्द लालबिहारी जी, एम.एड.,पी.एच.डी
उपमन्त्री : श्री प्रभाकर जीऊत जी, पी.डी.एस.एम
उपमन्त्री : श्री प्रदीप रामधनी जी
कोषाध्यक्ष : श्री रवीन्द्रसिंह गौड जी, आर्य भूषण
उपकोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी जी, एम.एस.के.,आर्य रत्न
उपकोषाध्यक्ष : श्री भोलानाथ जीऊत जी
उपकोषाध्यक्ष : श्री लेखराजसिंह रामधनी जी, बी.एस.सी.
पुस्तकाध्यक्ष : श्रीमती रत्नभूषिता पुचुआ जी, एम.ए, पी.जी.सी.ई, आर्य भूषण
पुस्तकालय / डिजिटल मीडिया : श्री विवेकानन्द लोचन जी
अंतरंग सदस्य : श्री प्रवीण बुधन जी
' : श्री भगवानदास बुलाकी जी
' : श्री धर्मजय दोमा जी
' : श्री धर्मवीर गंगू जी, एम.ए, पी.जी.सी.ई
' : श्रीमती सती रामफल जी, आर्य भूषण
' : श्री रवीन्द्रदेव शीवपाल जी
' : श्री देवदत्त सोमना जी
' : श्रीमती पूर्णिमा देवी सुकन-तिलकधारी जी, एल.एल.बी
' : श्रीमती यालिनी देवी रघु-याल्लाप्पा जी, बी.ए.,पी.जी.सी.ई

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए :-
मन्त्री, आर्य सभा मोरिशस
१, महर्षि दयानन्द गली , पोर्ट लुई

श्री सत्यदेव प्रीतम
मन्त्री
३०/०३/२०१७

ARYA SABHA MAURITIUS

Arya Bhawan, 1 Maharishi Dayanand Street, Port Louis.
Tel : 212 2730; Fax : 210 3778; E-Mail : aryamu@intnet.mu

MANAGING COMMITTEE

The Managing Committee of Arya Sabha Mauritius for the year 2017-2018 has been constituted as follows:

REPRESENTATIVE OF SARVEDESHIK ARYA PRATINIDHI SABHA, N.DELHI : Prof. Soodursun JUGESSUR,CSK,GOSK, Arya Bhushan
HONORARY PRESIDENT : Dr. Roodrasen NEEWOOR,G.O.S.K, Arya Bhushan
PRESIDENT : Dr. Oudaye Narain GANGOO, M.A, Ph.D, O.S.K, G.O.S.K, Arya Ratna
VICE PRESIDENT : Shri Harrydev RAMDHONY, Arya Ratna
VICE PRESIDENT : Smt. Danwantee RAMCHURN, M.S.K, Arya Ratna
VICE PRESIDENT : Shri Balchan TANAKOOR, P.M.S.M, Arya Ratna
SECRETARY : Shri Satterdeo PEERTHUM, O.S.K, C.S.K, Arya Ratna
ASST. SECRETARY : Dr. Jaychand LALLBEEHARRY, M.A, M.Ed, P.h.D
ASST. SECRETARY : Shri Prabhakar JEEWOOTH, P.D.S.M
ASST. SECRETARY : Pt. Pradeep RAMDONEE
TREASURER : Shri Ravindrasingh GOWD, Arya Bhushan
ASST. TREASURER : Shri Rajendra Prasad RAMJEE, M.S.K, Arya Bhushan
ASST. TREASURER : Shri Bholanath JEEWUTH
ASST. TREASURER : Shri Leckrajsing RAMDHONY, BSc
LIBRARIAN/ARCHIVE : Smt. Rutnabhooshita PUCHOOA,M.A,P.G.C.E,Arya Bhushan
LIBRARY / DIGITAL MEDIA : Shri Vivekanand LOCHUN
MEMBERS : Shri Pravin BOODHUN
: Shri Bhagwandass BOOLAKY
: Shri Dharmjay DOMAH
: Shri Dharamveer GANGOO, M.A, P.G.C.E
: Smt. Suttee RAMPHUL, Arya Bhushan
: Shri Ravindradeo SEWPAL
: Shri Deoduth SOMNA
: Smt. Me. Poornima Devi SOOKUN TEELUCKDHARRY, LLB, Barrister at Law
: Smt. Yalini Devi Rughoo YALLAPPA, BA, P.G.C.E

All correspondences should be addressed to :-
The General Secretary, Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand Street, Port Louis

Shri Satterdeo PEERTHUM
General Secretary, 52573817 (Mob No.)
30 March 2017

पृष्ठ १ का शेष भाग

पारिवारिक संबंधों को भूलकर केवल विद्या अर्जित करने में ही मन को लगाना चाहिए।

शिक्षा से संबंधित राजनियम और जाति नियम में यह भी व्याख्यायित है कि ५ या ८ वर्ष से आगे लड़के और लड़कियों को घर में नहीं रहना चाहिए, अन्यथा उनके माता-पिता दण्ड के भागी होंगे ।

ब्रह्मचर्याश्रम में सर्वप्रथम यज्ञोपवीत धारण कर गायत्री मंत्र को अर्थ सहित जान लेना अति आवश्यक है ।

इसके पश्चात् सन्ध्योपासना की जो स्नान, आचमन, प्राणायाम, आदि क्रियाएँ हैं, वे सिखलायी जानी चाहिए। प्रथम स्नान इसलिए, ताकि शरीर के बाह्य अवयवों की शुद्धि हो सके। मनुस्मृति के अनुसार –

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ।।

अर्थात् जल से शरीर, सत्याचरण से मन और विद्या एवं तप से बुद्धि की शुद्धि होती है। यह विधान है कि भोजन से पूर्व स्नान करना चाहिए ।

प्राणायाम के सम्बन्ध में चार प्रकार की क्रियाएँ बतलाई गई हैं और वे निम्न हैं – बाह्य विषय अर्थात् प्राण को बाहर अधिक रोकना, आभ्यान्तर विषय यानी प्राण को यथायोग्य भीतर रोकना; स्तम्भृति अर्थात् प्राण को योग्यतानुसार जहाँ-तहाँ रोक देना और बाह्याभ्यन्तराक्षी तात्पर्य कि प्राण के विरुद्ध कार्य करना। ये चारों प्रकार का अभ्यास एक योग्य ब्रह्मचारी को आना चाहिए ।

व्यवहार की कुशलता के बारे में यह कहा गया है कि भोजन, छादन, बैठने, उठने, बोलने आदि विषयों में बड़े और छोटों का यथायोग्य व्यवहार होने चाहिए।

आगे ब्रह्मचर्य आश्रम में जिन दो यज्ञों को करने का विधान है, वह बतलाया गया है। सर्वप्रथम सन्ध्योपासना है, जिसे ब्रह्मयज्ञ भी कहा जाता है और इसके अन्तर्गत आचमन, मार्जन, समन्त्रक, प्राणायाम, मनसापरिक्रमा, उपस्थान, अघमर्षण मन्त्र और परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की रीति आ जाती है।

द्वितीय है अग्निहोत्र अर्थात् देवयज्ञ, जिसके करने से वायु तथा जल की शुद्धि होती है और सुख प्राप्त होता है। साथ ही ऐसा करने से वेद मंत्रों का पठन-पाठन और रक्षा भी होती है ।

अध्यापन-विधि में हम देखते हैं कि पढ़ाई आरम्भ करने से पहले ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी का मुख्य कर्तव्य होता है कि वह यज्ञोपवीत धारण करे। वर्णाश्रम व्यवस्था से केवल ब्राह्मण, क्षत्रीय और वैश्य का ही उपनयन होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य ३ प्रकार के होते हैं –
प्रथम – कनिष्ठ और इस अवस्था में २४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है।
द्वितीय – मध्यम, यहाँ पर ४४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।
तृतीय - उत्तम, इस अन्तिम अवस्था में ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन होता है ।

इसके पश्चात् ब्रह्मचर्याश्रम के अन्तर्गत शरीर की चार अवस्थाओं का वर्णन किया गया है –
पहला - वृद्धि जो १६ से २५ वर्ष तक का है
दूसरा - यौवन - २५ से प्रारम्भ
तीसरा - सम्पूर्णता - २५ से ४० वर्ष तक
और चौथा है – किञ्चित्परिहाण
स्त्री और पुरुष के लिए ब्रह्मचर्य का नियम तुल्य नहीं है – उदाहरणार्थ – यदि २५ वर्ष पर्यन्त पुरुष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे तो १६ वर्ष पर्यन्त कन्या ।

अध्येता अर्थात् पढ़ने वालों के नियम तैतीरीयोपनिषद् में दिया गया है, जो कि इस प्रकार से है – ब्रह्मचारी यथार्थ आचरण से पढ़े, सत्याचार से सत्यविद्याओं को पढ़े, धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों को पढ़े, बाह्य इन्द्रियों को बुरे आचरणों से रोक के पढ़े, मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटाकर पढ़े इत्यादि।

योगसूत्रों में यम और नियम के ५ प्रकार बतलाए गए हैं, जिनका ब्रह्मचर्याश्रम में यथोचित पालन होना चाहिए। यम के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आ जाते हैं और ५ नियम हैं – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान ।

विद्यार्थियों के लिए योग्य कर्तव्य यह है कि वे द्वेषभाव को त्याग, शुद्ध मन से सत्य को अपनाते हुए सदा सुशीलतायुक्त वाणी बोलें ।

इसके पश्चात् ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी के निषेधात्मक कर्मों की रूप-रेखा दी गई है, जैसे कि मद्यपान, मांस-सेवन, गन्ध, माला, रस, स्त्री और पुरुष का संग; प्राणियों की हिंसा आदि ।

फिर आचार्य द्वारा शिष्य और शिष्याओं को उपदेश दिया गया है कि उन्हें हमेशा सत्य बोलना, धर्माचार करना एवं प्रमाद रहित होकर पढ़ाई करनी चाहिए ।

पढ़ने-पढ़ाने के विषय में ५ प्रकार की परीक्षाओं से सत्यासत्य का निर्णय होता है, जिनमें ४ दार्शनिक विचार-धाराओं के पश्चात् ५ वाँ है आठ प्रमाण जिनमें हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति सम्भव और अभाव।

साधर्म्य और वैधर्म्य जानते हुए द्रव्य, गुण, कर्म और सामान्य, विशेष और समवाय, इन छः पदार्थों के तत्वज्ञान अर्थात् स्वरूप ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त किया जाता है। इन सब प्रकार की दार्शनिक विचार-धाराओं को ध्यान में रखने से पढ़ने-पढ़ाने और न पढ़ने व पढ़ाने योग्य ग्रन्थों की जानकारी होती है।

तृतीय समुल्लास के लगभग अन्त में पठन-पाठन विधि बतलाई गई है। प्रथम यह है कि शिक्षा से अक्षरों के उच्चारण का ज्ञान होता है। फिर है अष्टाध्यायी पाठ, जिससे सम्पूर्ण शब्द, अर्थ और सम्बन्धों की विद्या की जानकारी होती है। इसके पश्चात् धातु पाठ पढ़ने का विधान है।

तदनन्तर उणादिकोष, वार्तिक, कारिका, परिभाषा आदि का अध्ययन करके महाभाष्य पढ़ना चाहिए। इन सबको पढ़ने से पाठक वैयाकरण की पदवी पाता है, क्योंकि उसे वैदिक एवं लौकिक शब्दों को पूर्णता से बोध होता है, जिससे अन्य शास्त्र वह शीघ्र ही पढ़ने व पढ़ाने में समर्थ रहता है।

तत्पश्चात् ऋषि जी बतलाते हैं कि निघण्टु, निरुक्त, छन्द आदि षडङ्ग व उपाङ्ग एवं दर्शन, उपनिषद् आदि ऋषि मुनि कृत ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए । परित्याग करने योग्य ग्रन्थों का भी परिगणन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार हर एक पाठक का यह कर्तव्य बनता है, कि वह पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त करके संसार का कल्याण करे, ताकि संसार यथायोग्य धर्मपूर्वक बर्ताव करे और सर्वत्र सुख-शान्ति फैले ।

गायत्री-भवन में नारी-सम्मेलन

पंडिता प्रेमदा लीलकन्त, वाचस्पति

उन्नीस मार्च को 'फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद्' तथा आर्य सभा मॉरिशस के सहयोग से श्रीमती धनवन्ती रामचरण ने नारी सम्मेलन का आयोजन किया।

इस अवसर के विशेष वक्ता भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव श्रीमती नूतन पाण्डे जी थीं। महात्मा गांधी संस्थान की प्राध्यापिका श्रीमती अल्का धनपत जी भी मुख्य अतिथियों में थीं। आर्य सभा मॉरिशस के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, श्रीमती यालिनी रघू जी ने अपनी उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ाई।

पुरोहित और पुरोहिताएँ भी पीछे न रहे, बल्कि दूर-दूर से पंडिता करीमन जी, पंडिता सालिक और पंडिता हेमराज जी भी आई हुई थीं। फ़्लाक प्रान्त के वरिष्ठ पुरोहित श्री शिवशंकर रामखेलावन जी, पंडित सुमनदेव सुखनाथ जी, पंडित रामदू जी, वरिष्ठ पुरोहिता दोमन जी, पंडिता पुष्पा जी, पंडिता दुखन जी, पंडिता कुञ्जा जी, पंडिता लीलकन्त जी, पंडिता लोबिन जी, श्रीमती कासिया जी, श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी जी भी उपस्थित थीं।

पहला कार्य यज्ञ रहा। यज्ञ सम्पन्न करते समय सभी मुख्य वक्ताओं का आगमन हो गया था। यज्ञ के तुरन्त बाद स्वागत-भाषण माता धनवन्ती रामचरण जी द्वारा हुआ।

कार्य संचालिका श्रीमती विद्यावती कासिया जी थीं। कार्यक्रम को संचालन करते हुए, बारी-बारी से सब को अपना विचार प्रस्तुत करने का मौक़ा दिया। श्रीमती राजलक्ष्मी जी ने अपने भाषण में बैठी हुई विदुषियों को उदाहरण लेकर नारी की महत्ता पर बात की। इन जैसी महिलाओं से तो हमें प्रेरणा लेनी है और अपनी मार्गदर्शिका बना हमें और आगे जाना है।

श्रीमती अल्का घनपत जी ने अपनी मधुर वाणी से मानो अमृत बरसा दिया। उनका कहना था कि नारी स्वतन्त्रता और अपना अधिकार तो चाहती है, परन्तु किससे? इस संसार में यदि हमें जीना है, तो हमें पुरुष का संगठन चाहिए। नारी को पति, पिता, भाई, बंधु, बेटा सब तो चाहिए। फिर किससे अधिकार तथा स्वतन्त्रता चाहिए। यदि ठीक से देखा जाय तो आजकल की नारी, नारी ही की दुश्मन बनी फिरती है। श्रीमती अल्का जी ने समझाया कि महिला को अत्याचारों से बचना है।

उन्होंने कहा कि नारी हर रूप में श्रेष्ठ है, वह चाहे माँ हो, बेटी हो, बहन हो या पत्नी। वह अपना कर्तव्य बड़ी खूबी से निभाती है। महिला को महत्व देते हुए, उन्होंने कहा कि नारी चाहे कितने ऊँचे पद को सम्भाले, चाहे वह अपने पति से दुगुना कमाती हो, उसे अपनी मर्यादा में ही रहना चाहिए । अपनी मर्यादा को यदि वह पार कर गई तो मानो बरबादी आ गई। स्वर्ग जैसा घर नर्क बन जाता है । इसलिए माता-बहनो, सावधान ! अपने मान-सम्मान और मर्यादा को कभी न भूलें।

श्रीमती नूतन पाण्डे जी ने भी नारी की महत्ता पर ज़ोर दिया। उन्होंने समझाया कि यदि पुरुष चाहे तो अपनी पत्नी को मदद ज़रूर कर सकता है। पति को चाहे काम करना आये या न आये रसोईघर में पत्नी के बग़ल में खड़े रहने से ही उनका साहस बढ़ जाता है। इसी प्रकार छोटे-छोटे कामों में हाथ बटाना चाहिए तब जाकर वह अपने घर को सम्भालती है और स्वर्ग बनाती है। कई उदाहरण देकर समझाया कि नारी के सद्गुणों से ही सम्मान और अधिकार मिलता है। माताओं, बहनों को यदि अधिकार तथा सम्मान पाना हो, तो सर्वप्रथम गुणों को अपनाना और धर्म तथा संस्कृति को बचाना होगा ।

आर्यसभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी ने आजकल की समस्याओं पर बात की । देश में तलाक़ की समस्या, आत्महत्या और महिलाओं की हत्या बढ़ गई है, इन सब बातों पर भी ध्यान देना है, क्या कारण है? कैसे इन समस्याओं को सुलझाना है ? ऐसी नारी भी है, जो अपने पति पर अत्याचार करती है, आज समय बदल गया है, पुरुष पर नारी का अत्याचार बढ़ता चला जा रहा है।

श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने भी अपने सन्देश में सुमंगली देवी, पंडित काशीनाथ की सुपुत्री मोक्षदा का उदाहरण देते हुए, नारी को महत्व दिया। पंडिता सालिक ने महिला की महत्ता और कमज़ोरी पर अपने विचार दिये। मोहिनी प्रभु जी का लघु सन्देश रहा। बीच में पंडिता ललिता कुञ्जा और पंडिता विश्वानि द्वारा दो भजन प्रस्तुत किये गये, जो नारी शक्ति पर आधारित थे।

सभी वक्ताओं के भाषण जोशीले रहे और ऐसा लगता था बस यह चलता रहे। ऐसे अवसर कम आते हैं, जहाँ पर अधिकार की बातें होती हैं, और जहाँ विचार बाँटे जाते हों । जो भी इस सम्मेलन में आये थे, कुछ-न-कुछ अपने साथ लेकर गए। कार्यक्रम के दौरान आये हुए अतिथियों का स्वागत शाल और गुच्छे से किया गया। अन्त में श्रीमती यालिनी रघु जी ने धन्यवाद सम्पन्न किया और पंडित रामखेलावन जी द्वारा शान्ति-पाठ हुआ । सभी को जलपान आदि से सत्कार किया गया।

हमने होली मनायी

एस. प्रीतम

सोमवार दि० १३.०३.२०१७ को सायंकाल ४.०० बजे पंडित बिकारी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें यजमान के रूप में पुरुष समाज के ६-७ सदस्यों ने भाग लिया। यज्ञ के उपरान्त सायंकालीन पाठशाला के लड़कियों ने हिन्दी में राष्ट्रगान का सुमधुर आवाज़ में गान किया जो उपस्थित लोगों को खूब भाया।

यज्ञ समाप्त होते-होते आर्य मंदिर भाइयों और बहनों से पूरा भर गया। उधर प्रांगण में भोजन तैयार हो रहा था और अन्दर भाषण और भजन का कार्यक्रम चल रहा था। महिला समाज का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्यसभा की ओर से महामंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम, उपमंत्री श्री रवीन्द्रसिंह गौड और श्रीमती यालिनी यालापा उपस्थित थे। कार्यक्रम का अन्त हुआ सभासदों द्वारा झाल, मँजीरा और ढोलक के संग होली के चौताल और धमार से। सभा विसर्जन के बाद सभी को भोजन से सत्कार किया गया। होली शुद्ध-वैदिक पधति द्वारा सम्पन्न हुई।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी की अनुपम छवि

पं० रामसुन्दर शोभन, वाचस्पति

संसार में बड़ी संख्या में लोगों का आवागमन होता है। कई तो काल की मरुभूमि में खो जाते हैं। उनके पलायन होते ही उनके नाम और चित्र विस्मृति के अवसान में विलीन हो जाते हैं। अनेक बार तो सन्देह होता है कि क्या कभी ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति हुई थी, इस संसार में ? विश्व के नेपथ्य पर अनगिनत महान्-महान् नेता आते हैं, परन्तु अपनी भूमिका का कोई चिह्न अंकित किये बिना ही आवरण के पृष्ठगत हो जाते हैं और पुनरप्यागमन नहीं करते । जो लोग काल रूपी रेत पर अपने पद-चिह्न कि अमिट छाया छोड़ जाते हैं, वे निसंदेह असाधारण योग्यता और अलौकिक सामर्थ्य वाले पुरुष होते हैं। इस दिखावे और प्रपंच के युग में ऐसे भी अनेक मनुष्य हैं, जो अपनी चपल वाक्शक्ति के प्रयोग से लोगों को प्रभावित कर अपना उल्लू सीधा करते हैं और अपने आपको महापुरुष कहलाने का दावा करते हैं ।

२६ अप्रैल १८६४ ई० (६ वैशाख १९२१ वि) में मूलतान, जो पंजाब प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर है, उस पवित्र और रमणीक स्थल पर पंडित गुरुदत्त जी का प्रादुर्भाव हुआ था। वे गंभीरता और मौनावलम्बिता की साक्षात् प्रतिमा थे। जो भी वाणी उनके मुखारविंद से मुखरित होती थी, वह विद्वत्ता के श्वेत-स्वच्छ और मधुर दुग्ध से धुली होती थी। पंडित गुरुदत्त जी को झूठी महत्वकांक्षा और दम्भ स्पर्श नहीं कर पाती थीं। सच्चे अर्थों में पंडित जी महान् थे। उनकी स्पष्टवादिता और युक्ति शून्यता (गंभीरता) की सुरभि चतुर्दिश सुरभित होता था।

पंडित गुरुदत्त जी किन अर्थों में महान् और पवित्र आत्मा थे ?

– *प्रथम* - वे एकेश्वर विश्वासी थे और परमपिता परमेश्वर में उनकी अगाध श्रद्धा और भक्ति थी।

– *दूसरे* – उनकी सोच सकारात्मक होती थी, कल्पनाएँ पवित्र और विचार प्रेरणादायक होते थे।

– *तीसरे* - पंडित जी के अन्दर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत शक्ति थी। प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी थे।

– *चौथे* - जो-जो दिव्य शक्तियाँ महापुरुषों के गुणों में विद्यमान् हैं, वे सब अलौकिक शक्तियाँ पंडित जी में विराजमान थीं।

– *पाँचवे* – वे विचार और व्यवहार की पात्रता रखते थे, उनका जीवन अखण्ड रीति से एकरूपता का प्रतीक था।

– *छठे* - झूठ-मूठ के धार्मिक होने का फटे ढोल पीटने वालों में से नहीं थे। उन्हें लोगों के मूढ़ विश्वासों और पक्षपात के भय से समझौता करना तनिक भी स्वीकार नहीं था।

– *सातवें* - वे तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी थे, सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की महिमा का चिन्तक और रात्रीय निरीक्षक अर्थात् गगन में उन चमकते तारों और उनके भिन्न-भिन्न आकृतियों का अवलोकन करते थे।

– *आठवें* - वे दृढ़ संकल्पी और प्रबल कर्मयोगी थे। अपनी स्वभाविक दिव्य शक्ति के प्रयोग से कठिनाइयों को पाँव से रौंदते हुए संसार को ज्ञान का पथ प्रदर्शित करते थे।

गुरुदत्त समकालीन सज्जनगण अपने नायक को सम्मान और आदर्श का पुनीत पात्र मानते थे। वे अपने काल के अद्वितीय महामानव समझे जाते थे। उनकी महानता पर किसी को तिल भर भी सन्देह नहीं था। उनके जीवन के अध्ययन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि पंडित गुरुदत्त जी अवश्य ही मानवों में मूर्धन्य थे।

नव संवत्सर

भगवन्ती घूरा

सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ और न्यायकारी ईश्वर की कृपा से एक निश्चित जीवन प्राप्त होता है, और मानव प्राणी को ज्ञान अर्जन करने की क्षमता से सर्वश्रेष्ठ बनाया जाता है। भले ही हम अपने भविष्य से अनजान हैं, लेकिन हम आशावादी और प्रगतिशील प्राणी हैं। सौभाग्य से हम आर्य जगत् की छत्र-छाया में रहकर आगे बढ़ रहे हैं, और समय रहते इस जीवन को सफल-सार्थक बनाने की कामना करते हैं।

देखते-देखते हम इस साल के अन्त में आ पहुँचे, और एक नव संवत्सर २०७४ का स्वागत कर रहे हैं। सम्भवतः चाहते तो यही हैं कि जैसे बीता साल कुशलमंगल रहा, इस नये साल में भी जीवन में संतोष-सुख और शान्ति बनी रहे। ऐसे में एक ज्वलन्त वेद मन्त्र पर ध्यान जाता है। यथा – **'ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्स्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।।'**

इस मन्त्र द्वारा हम प्रार्थना करते हैं, कि हम अच्छे मार्ग के पथिक बनकर भौतिक और आध्यात्मिक सुख के भागीदार बनें। पाप कर्म और दुष्ट भाव से दूर रहकर उपकारी बनें। ईश्वर को सर्वस्व मानकर गुरुजनों के पथ से आगे बढ़ें, और सत्त-चित-आनंद पाने में समर्थ होवें, शुद्ध विचार और सदाचरण से आगे बढ़ें । ऐसी मान्यता से हम मानव धर्म के अनुयायी बन सकते हैं।

नया वर्ष अभिनन्दन और पेश हैं कुछ विचार ।
साल का आना और जाना है समय का तक़ाज़ा ।
बारह महीने के बाद स्वाभाविक है, एक
नया साल का आना।
चैत्र प्रतिपदा के सूर्योदय से है नये दिन
और नये साल का आना ।
उत्साहपूर्वक आशावादी और गरम जोशी
से है आगे बढ़ना ।
ऊँचे-नीचे रास्ते, राह के रोड़े को करना है पार ।
जब कि बसाना है हमें एक मुक़म्मल सुखी संसार।
उत्तम कर्म से मानव धर्म को करें साकार ।
समय है बड़ा बलवान् हमें करना है इज़हार।
पल-पल से आगे बढ़ते समय सबको करे निहाल।
चौबीस घंटे का दैनिक समय नित्य है
गतिशील जीवन का सार ।
'ओ३म्' की ध्वनि सदा बनी रहे हमारे
जीवन का आधार।
धन-धान्य से समय रहते हुए करें हम
इस जीवन का उद्धार।

Words, Deeds and our Responsibilities

Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhooshan

Very often we hear people criticizing others for not doing what they would have wished to see around. Most often we forget our own responsibilities, and believe that others are solely responsible for weaknesses in our achievements and failures. This is wrong for we all share the responsibilities for the success or failure of our social development, whether it is in our families or in society.

It is easy to accuse others for what is happening when we ignore our own responsibilities. Social evils are on the rise and loss of values is the current order of the day. Whether it is at home or in other countries, we are daily struck with social calamities that could have been avoided if preventive methods had been adopted. Governments and NGOs are spending millions to combat and contain the spread of social evils that manifest themselves in multiple forms. These actions are mostly reactive and hardly preventive.

In our socio-religious organizations we keep complaining about the absence of capable youths to handle the situations when we have not ourselves given adequate attention to their needs and mindset. It is easy to put the blame on the education system that has glaringly failed to imbibe necessary qualities of mind and spirit amidst our youth. It is we who vote for the people who decide our policies for educational reforms. It is we who blindly believe that money is the sole element for our happiness. We are influenced by the daily advertisements that hammer on economic developments and our need to have higher standards of living that are measured by our capacity to earn and spend. Unknowingly we become victims of gross capitalism and consumerism!

Three years ago I attended an international conference hosted by the Commonwealth Science Council on Science and Technology for sustainable development in Bangalore, India. It had the participation of the top achievers in this area as main paper presenters. One gentleman who had gained world acclaim in Information Technology in USA Silicon Valley and had amassed a lot of wealth had left that Eldorado to establish something similar in Bangalore. Very laudable motive you would say! Indeed, after about ten years, Bangalore became the top IT centre in India. The gentleman was speaking about his achievements, and said that ten years back when he drove down the streets, he would see bicycles parked in front of the houses, and hardly any cars. Now he sees so many Mercedes cars parked in front of those houses. The standard of living had indeed increased, but the bad side of it is that Bangalore had equally become a top polluted city in India, full of smog and dust. It has added to global warming, climate change and food insecurity. To him development meant higher life styles! I was shocked and pained to note the change in mentality where money brings not only high-style living but also corruption, drugs and alcohol in its wake. Values had changed from the concept of simple living and high thinking to lavish living and money-making! This is where our deeds and responsibilities have to be well thought of and in line with the eternal values as prescribed in our scriptures.

But who will transmit these values in our society? Some will put the blame on our pandits, policy-makers, educators and politicians. We are the ones who put such powers in their hands! Are we aware that we, as parents and as members of the society have the power to get the school and college curriculum changed by putting pressure on the Ministries? Cambridge and London Universities that prescribe the curricula are ever ready to make them locally appropriate. Are we aware that we can force the government to bring in laws and change legislations that can improve our social and physical environment?

Within our associations and religious institutions youths are hardly visible. Had we given them the proper education in our homes, assumed our parental responsibilities, spent adequate quality time with them and guided them, inculcated the proper *Sanskaaras* in them, they would have come in the forefront to assume better responsibilities. Such approach exists in the Sukhi Parivaar program where the motto is *'Peace and harmony in the world start with peace and harmony in the home.'* How many are willing to promote the concept?

It is the responsibility of one and all, starting with ourselves, to bring the necessary changes in the society. The earlier we start in our homes, the better and faster will be the change we want to see.

The way we conduct our activities also has to be reviewed, and brought in line with the needs of a technically trained youth. We see dwindling participation in weekly '*satsanghs*' where the youth feel it a waste of time to attend. Why can't we reduce the time of chanting mantras and the rituals and devote some time to explanation of the mantras, and to invite some youngsters to address the audience on their professions, share their views on progress and on ways to reduce the spread of drugs and social evils in the society? Most youths whose parents were once good Arya Samajists have risen in areas of top policy making and management. They need to be recognized and their inherent values brought out. Why should we see the same people monopolizing the address and often repeating the same thing? Our preachers have to be trained on these lines. The use of IT, where possible, has to be encouraged, and open discussions should follow a fifteen to twenty minute presentation or address. This will make the audience more interested, react to statements and also use their own reasoning.

Such approach will necessarily require personal sacrifice, self-education, and the need for hearing others with patience. We should never think that we have the monopoly of right knowledge in this changing world. Self-introspection is essential. We need to be humble and agree to change our ways. We are all responsible for what is happening, and we should all contribute in finding and implementing solutions.

The world moves on whether we want it or not! And in this onward march, let us be the tools that the divine has modeled. Where there is a will, there is a way! So let us use our energies with optimism and perseverance.

sjugessur@gmail.com

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

Shri Rāma : a role model

"A civilization is not built of bricks, steel and machinery, it is built with men, their quality and character." Dr. Radhakrishnan

Rāma was a product of Vedic education who, over and above knowledge, had a noble character. A thorough study of his personality will instil into our minds a spirit of piousness for the good of mankind where we would humbly live the ideals of spiritual reality. *"Lives of great men all remind us, we can make our lives sublime, and, departing, leave behind us, footprints on the sands of time."* (Henry Wadsworth Longfellow)

The ideal son

Respect for elders, namely, father, mother, teachers and guests is a striking feature in his life. For good crops we need quality seeds; top farmers, labourers, equipment, etc.; and the appropriate environment, namely- fertile land, conducive climate – rainfall, sunshine, etc.

His father King Dashratha had performed the *Putreishti Yajna* or *Garbādhāna Samskāra* to beget children of the highest order. Such Yajna implies adhering to certain rules by both the father and mother, amongst others: a period of *Brahmacharya*: abstinence (stay away from sexual relations some 6-12 months before conception, control of senses - organs of perception (*jnānendriyan*) and actions (*karmendriyan*), qualitative and quantitative food intake, external and internal cleanliness, physical exercises for good health, study of scriptures and ancillary texts for a sound mental / moral condition with the mind engaged in good thoughts at all times.

Extra care is required after conception to delivery. The physical aspect in terms of a clean environment, proper food / diet for the mother and the intangible aspect where the parents, near and dear ones need be content, and stay away from grief, negativity, etc. As you sow so shall you reap!

Rāma's love and respect for elders, still quoted as an ideal, reveals a top-quality upbringing with the mother as the most important educator prior to the father and the Guru. We can create a new generation where all children would be born within a planned objective …not as by-products of kāma, vāsnā and unplanned parenthood.

The ideal student

At the feet of Rishi Vishvāmitra, Rāma understood the ideals of education by developing the beauty of the body, mind and spirit, retaining the values transmitted across millennials. He moulded himself as an individual capable of living a perfect and full life, upholding Dharma all the way through.

As student he observed strict regulations. Learning both worldly and spiritual knowledge was important, but learning to be disciplined was more important - discipline which he learnt through the strict obedience to laws and regulations of student life, discipline that became rooted in his day-to-day living.

He mastered the art of ethical behaviour, politics and warfare. At a tender age he went with the Guru (teacher) to the forests to protect the ashram and yajnas from demons (rākshasa). Punctual in his daily activities, prayer and meditation were part and parcel of his life. Rāma's education were along the Vedic concepts *…sahanāvavatu sahanubhunaktu…* where both the Guru and the student vow to increase each other's welfare, indeed a symbiotic or mutually beneficial relationship. Modern education has to pick up the essentials of the Vedic precepts to enable children to be as brilliant as Rāma in body, mind and spirit.

The ideal brother

Rāma upholds the vows of his father to Queen Kaikeyi. He refuses Bharata's request to stay back and rule to Bharat, rather he happily goes to exile. History bears testimony to brothers often fighting each other for wealth. The way Rāma puts up his arguments leaves Bharat with no alternative than to surrender to the will of their father. Rāma as the eldest becomes a role model to Lakshamana, Bharata and Shatrughna. The fraternal bonding was, is and will always be quoted as a model to the world …we need to only to copy and live accordingly …and we succeed in the ideals of looking at all with a friendly eye as well as consider the whole world as one family (…mitrasya chakshushā samikshāmahe... & vasudhaiva kutumbakam.)

The ideal husband

Bound by the oaths of marriage Rāma and Sita were faithful to each other (pativratā & patnivratā), indeed a two way traffic which has often been ignored since time immemorial. He strived to provide for the needs of his spouse. The only time he succumbed to the wants (chase the golden deer) became the trigger to the battle with Rāvana. That incident also reveals that the evergreen Vedic values should never be ignored. We should be diligent as "needs are few but wants unlimited." Loyalty between spouses will save the world from Sexually Transmitted Diseases (STDs) and lead to a healthier society with people pure at the level of the body, mind and spirit.

The accomplished ruler

He was a good listener as well as a forceful advocate of righteousness which he did with a refined touch. His glory and prowess were unlimited. He was free from ill-will. Valiant, he was kind and sweet in speech and most courteous. He was devoted to the good and prosperity of his kingdom and his subjects, defending the weak and ever virtuous. He as firm as mountains on his promises; as fierce as fire on the battle field; as calm as the cool breeze in temper; as patient as Mother Earth; and as righteous as Dharma. He was ever-considerate to his people in times of griefs and like a father, he shared their joy. He had his sway over the whole world by his way of life …practising what he preached.

Ideals or role models have a constructive impact on the lives of others. They are remembered, cherished and episodes of their lives are often quoted for the purpose of adopting them in our own life.

The Rāma Navami celebration, is a right period for us to make a honest attempt to grow in the virtues that Rāma represents …become master of our mind and senses by soaking ourselves with the spirit of the ideal personality, generally referred as Maryāda Purushottam Shri Rāmchandra).

Only chanting the name of Rāma will lead to nowhere unless we strive to unite character, actions and personality traits (guna, karma & svabhāva) with that of Rāma. That requires a paradigm shift in our behaviour with total harmony between our thoughts, speech and actions (manasā, vāchā & karmanā).

मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनां।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।।
Manasyanyat vachasyanyat karmanyanyat durātmanām
Manasyekam vachasyekam karmanyekam mahātmanām

Men of evil mind have one thing in the mind, another thing in their speech and something different in their actions.

Men of great mind have the same thing in their thought, word and deed, meaning what they think they talk about and what they talk about they translate into action.

Rāvana had greater knowledge than Rāma but his deeds led him to ill-fame. On the one hand, people make his effigy, throw sandals at it and burn it …on the other hand, Rāma is praised for his character, actions and personality traits (guna, karma & svabhāva).

The choice is ours:

EITHER

We live as men and women of evil thoughts, speech and actions

OR

We become men and women of the highest order.

Yogi Bramdeo Mokoonlall
Arya Sabha Mauritius